International Journal for Multidisciplinary Research
Plagiarism & Intellectual Property Rights in Digital Age (PIPRDA-2023)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

वर्तमान परिदृश्य में पारिवारिक संरचना का परिवर्तित स्वरूप : एक विश्लेषण

प्रो. हेमलता पारस

सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आगर मालवा

शोध–सार

सूचना और तकनीकी के इस युग में संपूर्ण विश्व एक नए परिवेश में ढल चुका है। भूमंडलीकरण और डिजिटलीकरण ने समाज की व्यवस्था को नई गति प्रदान की है। प्रत्येक क्षेत्र में नए आविष्कार एवं खोजने मानवीय जीवन में भी आमूल चूल परिवर्तन किए हैं। इस परिवर्तन से समाज की सबसे महत्वपूर्ण इकाई 'परिवार' भी अछूता नहीं रहा। आधुनिकता की दौड़ में पारिवारिक संरचना में विभिन्न सकारात्मक एवं नकारात्मक परिवर्तन जैसे–संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन एवं नाभिकीय परिवार प्रणाली का उदय, वैवाहिक संबंधो में परिर्वतन, विवाह–विच्छेदों में बढ़ोत्तरी, विवाहेत्तर संबंधों का प्रचलन, लिव इन रिलेशन, समलैंगिक संबंधों का चलन, सेरोगेसी तकनीक के द्वारा एकल अभिभावक बनने की नई संस्कृति, संतानों के उचित लालन–पालन में कमी, परिवार के आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक–सांस्कृतिक कार्यों में विविध परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं। नकारात्मक परिवर्तनों से उत्पन्न समस्या का हल भी परिवार के सदस्यों को ही आपसी सामंजस्य, प्रेम, स्नेह और आपसी सौहार्द से निकालना होगा, क्योंकि तेजी से बदलते परिवेश में परिवार ही वह संस्था है जो समाज को विखंडन से बचा सकती है।

keywords: पारिवारिक संरचना, भूमंडलीकरण, विवाहेत्तर संबंध, लिव इन रिलेशन, सेरोगेसी तकनीक।

"जैसे मोती गूंथकर बनता सुंदर हार,
त्यों रिश्ते की डोर से, बंध बनता परिवार"
–लक्ष्मण धामी' मुसाफिर'

परिवार सामाजिक संगठन की एक सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक निर्माणक इकाई है। बर्गेस एवं लॉक के अनुसार, "परिवार व्यक्तियों के उस समूह का नाम है जिसमें वे विवाह, रक्त या दत्तक संबंध से संबंधित होकर एक गृहस्थी का निर्माण करते हैं एवं एक दूसरे पर स्त्री–पुरुष, माता–पिता, पुत्र–पुत्री, भाई–बहन इत्यादि के रूप में प्रभाव डालते व अंतःक्रिया करते हुए एक सामान्य संस्कृति का निर्माण करते हैं।" सृष्टि के संचालन के लिए नव संतति का जन्म अनिवार्य है। अतः विवाह के द्वारा परिवार का निर्माण कर वैध माध्यम से संतानोत्पत्ति के द्वारा समाज की निरंतरता बनी रहती है। सामाजिकता का प्रथम पाठ मनुष्य परिवार में ही सीखता है। प्राणी जगत में परिवार एक छोटी इकाई है किंतु परिवार के बिना मनुष्य का अस्तित्व नहीं है। परिवार के महत्व को परिलक्षित करने के उद्देश्य से ही प्रतिवर्ष 15 मई को संपूर्ण विश्व में 'अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस' मनाया जाता है।

आगस्त काम्टे के अनुसार, "परिवार समाज की आधारभूत इकाई है। "व्यक्ति का निर्माण और विकास परिवार में ही होता है। परिवार मनुष्य को मनोवैज्ञानिक सुरक्षा प्रदान करता है। व्यक्तित्व का निर्माण करता है। प्रेम, स्नेह, सहानुभूति, आदर–सम्मान जैसी भावनाएं सिखाता है। धार्मिक क्रियाकलाप सिखाता है। धर्म स्वयं में नैतिक है अतः बच्चा नैतिकता सीख जाता है। बच्चों में संस्कार परिवार से ही आते हैं, इसलिए प्लेटो ने परिवार को मनुष्य की प्रथम पाठशाला कहा है।

पारिवारिक संरचना का प्रमुख आधार एक स्त्री और पुरुष के बीच संबंध है जो विवाह द्वारा पति–पत्नी के संबंधों में बदल जाते हैं। परिवार की संरचना का दूसरा आधार परिवार के बच्चे हैं। संरचना का तीसरा आधार सामान्य निवास स्थान या घर है। इस भांति पति–पत्नी, बच्चे और सामान्य निवास परिवार की संरचना को बनाते हैं। मरडॉक ने 250 समाजों के परिवार का अध्ययन कर यह बताया कि परिवार अब भी यौनगत, प्रजननात्मक, आर्थिक और शैक्षणिक कार्य करते हैं।

परिवार को एक लगभग स्थायी सामाजिक संगठन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें माता–पिता व उनके बच्चे होते हैं तथा जिसका मुख्य उद्देश्य यौन संतुष्टि, प्रजनन, पालन–पोषण, समाजीकरण, शिक्षण, निवास–स्थान, आर्थिक सहयोग आदि प्रदान करना होता है। परिवार की मुख्य विशेषताएं हैं– सार्वभौमिकता, सृजनात्मक प्रभाव, भावनात्मक आधार, सीमित आकार, सामाजिक संरचना में केंद्रीय स्थिति, सदस्यों का उत्तरदायित्व, सामाजिक नियंत्रण, परिवार की अस्थायी एवं स्थायी प्रकृति।

सूचना और तकनीकी के इस युग में संपूर्ण विश्व एक नए परिवेश में ढल चुका है। भूमंडलीकरण और डिजिटलीकरण ने समाज की व्यवस्था को नई गति प्रदान की है। प्रत्येक क्षेत्र में नए आविष्कार एवं खोजने मानवीय जीवन में भी आमूल चूल परिवर्तन किए हैं। इस परिवर्तन से समाज की सबसे महत्वपूर्ण इकाई 'परिवार' भी अछूता नहीं रहा। आधुनिकता की दौड़ में पारिवारिक संरचना में विभिन्न सकारात्मक एवं नकारात्मक परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं।

संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन एवं नाभिकीय परिवार प्रणाली का उदय

पुरातन युग से ही भारतीय समाज व्यवस्था में संयुक्त परिवार प्रणाली प्रचलित है। संयुक्त परिवार प्रणाली में एक ओर जहां वृद्धजनों को सहारा मिलता है वहीं दूसरी ओर उनके बुद्धि कौशल और आत्मानुभव नव उत्पत्ति के लिए उपयोगी होते हैं। समेकित अधिवास, समेकित संपत्ति, समेकित जिम्मेदारियां एवं समेकित रीति–रिवाज परिवार में नियंत्रण और नियमबद्ध आचरण बनाए रखते हैं, किंतु व्यक्तिवादिता, आधुनिकता का अंधानुकरण, पश्चिमी सभ्यता का अनुसरण, शहरीकरण, उद्योगो का विस्तार, सूचना और तकनीकी क्रांति ने संयुक्त परिवार प्रणाली को मरणासन्न अवस्था में पहुंचा दिया और एकाकी या नाभिकीय पारिवारिक संरचना का उदय प्रारंभ हुआ। इन नाभिकीय परिवारों की जीवनवृति ने अकेलेपन को जन्म दिया। इन परिवारों में पति–पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे होते हैं। वर्तमान में नाभिकीय परिवार में एक या अधिकतम दो ही संताने होती है जिसके कारण विभिन्न नाते–रिश्ते विलुप्त होते जा रहे हैं। एकाकी परिवार की जीवनचर्या ने दादा–दादी, नाना–नानी, बुआ, चाचा, मौसी, मामा आदि की गोद में खेलने व लोरी सुनने वाले बच्चों को मोबाइल और वीडियो गेम का आदी बना दिया। उपभोक्तावादी संस्कृति, अपरिपक्वता, व्यक्तिगत स्वार्थ सिद्धि के कारण अपनी धर्म, संस्कृति, प्रथाओं से विमुख कर दिया।

वैवाहिक संबंधो में परिर्वतन :

वर्तमान समय में पति–पत्नी के मध्य संबंधों में पहले की तरह घनिष्ठता एवं माधुर्य का अभाव हो गया है। 'पतिव्रता धर्म' की अवधारणा पुराने समय की बात हो गई है। सात जन्म तक साथ निभाने की कसम खाने वाले दंपत्ति अब अपने अपने अधिकारों के प्रति सजग हो गए हैं। आधुनिक शिक्षा, पश्चिमीकरण एवं सामाजिक जागरूकता ने स्त्रियों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया है जिससे स्त्रियों की अपने पति पर आश्रित होने की स्थिति में बड़ा बदलाव आया है। परिवर्तन के इस दौर में स्त्रियां भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति प्राप्त कर रही हैं। अब परिवार में स्त्रियां भी निर्णायक भूमिका निभा रही है।

विवाह–विच्छेदों में बढ़ोत्तरी :

आज परिवारों का आधार प्रेम, श्रद्धा, स्नेह, आपसी सामंजस्य न होकर संविदात्मक अधिक प्रतीत होता है। विवाह को एक धार्मिक संस्कार न मानकर कानूनी समझौता माना जाता है। स्त्री शिक्षा व जागरूकता ने स्त्रियों को अपने अधिकार के प्रति सचेत कर आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया किंतु इसका नकारात्मक पक्ष स्वयं की स्वतंत्रता से जुड़ गया। आज स्त्री भी पुरुषों के समान नौकरी, व्यापार–व्यवसाय सभी क्षेत्रों में कार्य कर रही है। पति–पत्नि दोनों ने अपने–अपने कर्तव्यों को विस्मृत कर दिया है। दोनों बस अपनी इच्छा पूर्ति और अहम को अधिक महत्व देते हैं। जिससे दोनों के मध्य विवाद की स्थिति उत्पन्न होती है, जो विवाह विच्छेद में बदल जाती है। विवाह विच्छेद पारिवारिक संरचना के बिखराव का एक मुख्य कारण है, जिससे ना केवल दंपत्ति बल्कि उनकी संतानों का जीवन भी कष्टमय हो जाता है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार, जबकि भारत में तलाक की दर अपेक्षाकृत कम है, पिछले दो दशकों में यह संख्या दोगुनी हो गई । यह पारिवारिक मूल्यों के क्षरण का लक्षण है, विवाह के संबंध में पश्चिमी विचारों को अपनाना है, और यह परिवार की इकाई और बच्चों की भलाई के लिए खतरा है।

विवाहेत्तर संबंधों का प्रचलन :

भावनात्मक लगाव का अभाव, नवीन संबंधों के प्रति उत्सुकता, जीवनसाथी का गलत आचरण आदि अनेक कारण विवाहेत्तर संबंधों के लिए उत्तरदायी हैं जो पारिवारिक सौहार्द को नष्ट करके असहज एवं कष्टकारी स्थिति उत्पन्न करते हैं जिसका बच्चों पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है और पारिवारिक संरचना बिखरने लगती है। सामाजिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक स्तर पर पति पत्नी का संबंध एक मजबूत बंधन माना जाता है, इसके बावजूद हमारे समाज में बहुत पहले से विवाहेत्तर संबंध पाए जाते हैं किंतु हाल के वर्षों में बदलाव यह आया है कि जहां विवाहेत्तर संबंध पहले एक या दो ही चोरी छुपे देखने में आते थे, आज उनकी संख्या इतनी बढ़ चुकी है कि समाज का एक फैशन बन गया है। अप्रत्यक्ष रूप से ही सही किंतु समाज में किसी न किसी स्तर पर इसे स्वीकार भी किया जाने लगा है। आज जिस गति से हमारे समाज में विवाहेत्तर संबंध बढ़ रहे हैं उसने तो विवाह संस्था पर सवालिया निशान लगा दिया है साथ ही परिवारिक संरचना को विकृत कर दिया है।

लिव इन रिलेशन परिपाटी :

आधुनिक जीवन शैली के अंधानुकरण में युवा पीढ़ी ने प्राचीन रीति–रिवाजों और परंपराओं को बिना उनकी उपयोगिता जाने नकार दिया। युवा पीढ़ी विवाह को अब अपनी स्वतंत्रता में बाधक समझती है। जो संबंध विवाह पश्चात ही वैध माने जाते हैं उन्हें लिव इन रिलेशनशिप का नाम देकर उचित ठहराने का प्रयत्न किया जा रहा है। लिव इन रिलेशनशिप या लिव इन संबंध से आशय यह है इस व्यवस्था में दो वयस्क या एक जोड़ा बिना विवाह किये एक ही छत के नीचे पति पत्नि की तरह रहते है। इसमें ना तो किसी प्रकार का धार्मिक बंधन है और न ही कानूनी संविदा। स्त्री पुरुष जब तक चाहे साथ रहे और कभी भी साथ छोड़ दें। किसी भी पक्ष की कोई नैतिक जिम्मेदारी नहीं होती। लिव इन संबंध ने पारिवारिक संरचना के अस्तित्व पर ही आघात कर दिया है।

समलैंगिक संबंधों का चलन :

समलैंगिकता अर्थात् समान लिंग के व्यक्तियों का एक दूसरे के प्रति आकर्षण। वह पुरुष जो अन्य पुरुषों के प्रति आकर्षित होते हैं, उन्हें पुरुष समलैंगिक अथवा 'गै' कहते हैं और वे महिलाएं जो अन्य महिलाओं के प्रति आकर्षित होती हैं उन्हें महिला समलिंगी या 'लेस्बियन' कहते हैं। समलैंगिक व्यक्ति आपस में विवाह कर रहे हैं अथवा साथ–साथ रह रहे हैं। ऐसे समलैंगिक संबंधों को विधिक मान्यता प्राप्त होने से पारिवारिक संरचना का आधार ही डगमगा गया है। चूंकि परिवार एक ऐसी संस्था है जिसमें दो विषमलिंगी व्यक्ति विवाह नामक संस्था के द्वारा प्रवेश करते है और संतानोत्पत्ति द्वारा समाज की निरंतरता बनाए रखते हैं किंतु समलिंगी विवाह द्वारा जिस परिवार की नींव पड़ती है, उस पर मकान बनाना संभव ही प्रतीत नही होता है।

सेरोगेसी तकनीक के द्वारा एकल अभिभावक बनने की नई संस्कृति–

रिश्तो में आपसी विश्वास की कमी , बंधनमुक्त जीवन की इच्छा और आत्मसंतुष्टि की चाह में वर्तमान समय में अचरज भरे नवीन प्रयोग मानव द्वारा अपने जीवन में किए जा रहे है। एक और जहां मानव,समाज का अभिन्न अंग होकर भी उसकी संस्थाओं विवाह परिवार आदि की अवहेलना कर रहा है, वही दूसरी और स्वयं विज्ञान के प्रयोग से सेरोगेसी तकनीक से एकल अभिभावक बन कर अपूर्ण परिवार स्थापित कर रहा है। एक आदर्श परिवार में माता पिता और उसकी संताने होती है। संतान के लिए पिता का प्यार और माता की ममता दोनो अनिवार्य होती है, किंतु वर्तमान में अनेक ख्याति प्राप्त हस्तियों जैसे करण जोहर, तुषार कपूर आदि ने सेरोगसी तकनीक से एकल अभिभावक बनकर नई संस्कृति स्थापित करने की चेष्टा की है।सेरोगेसी का मतलब है बिना शारीरिक संपर्क के किसी महिला की कोख से बच्चे उत्पन्न करवाना। इस तकनीक का उपयोग विशेषकर उन दंपत्ति के लिए किया जाता है जो निःसंतान है। इस नई संस्कृति में प्रारंभ से ही संतान को माता या पिता में से किसी एक की कमी महसूस होती है।संतान के पालनपोषण के लिए माता पिता दोनों ही अनिवार्य है। अतः इस प्रकार निर्मित अपूर्ण परिवार से समाज किस दिशा में विकास करेगा।

संतानों के उचित लालन–पालन में कमी :

बढ़ती महंगाई उपभोक्तावादी संस्कृति एवं उच्च जीवन शैली की चाह ने परिवार में पति–पत्नी दोनों को ही धन उपार्जन हेतु विवश कर दिया है। क्योंकि मात्र एक की कमाई से सारी आवश्यकताऐं पूर्ण नहीं हो सकती। इस स्थिति में सबसे विकट प्रश्न संतानों का उचित प्रकार से लालन–पालन, पोषण एवं संस्कार प्रदान करना है क्योंकि माता–पिता दोनों ही कामकाजी होने के कारण घर से बाहर रहते हैं और

संयुक्त परिवार विखंडित हो चुके हैं इसलिए बच्चों को अनुशासन,आचार–व्यवहार,संस्कृति का महत्व कौन समझाएं? बच्चों के पालन पोषण पर पूर्णतः बाहरी संस्था या व्यक्तियों पर निर्भरता बढ़ रही है। मां के स्थान पर आया बच्चों को संभालती है। झूला घर, प्लेस्कूल में बच्चों को रखा जाता है। यदा–कदा घर से दूर होस्टल भी भेज दिया जाता है।

माता पिता संतानों के लिए सारी सुख सुविधाएं तो जुटा लेते हैं किंतु उनके साथ समय व्यतीत नहीं कर पाते हैं। उन्हें सही गलत की सीख, संस्कार, सदव्यवहार और अनुशासन की शिक्षा नहीं दे पातेहैं। इस परिस्थिति में संतानों का लालन–पालन उचित ढंग से नहीं हो पाता हैं। कई बार बच्चा मानसिक रूप से कमजोर हो जाता है और अवसाद में चला जाता है या फिर मनोरंजन के अन्य माध्यमों मोबाइल, वीडियोगेम, कंप्यूटर के साथ समय व्यतीत करता है, जिससे बालमन में अनेक विकृतियां आ जाती है। वह परिस्थिति से सामंजस्य नहीं कर पाता है, चिड़चिड़ा हो जाता है, हिंसक बन जाता है। यह स्थिति आगे चलकर और भी भयावह हो सकती है।

परिवार के कार्यों मेंपरिवर्तन :

परिवार के विभिन्न प्रकार के कार्यों जैसे आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक–सांस्कृतिक कार्यों में विविध परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं। औद्योगिक क्रांति से पूर्व तक परिवार उत्पादन एवं उपभोग दोनों का ही केंद्र था। लेकिन अब परिवार उत्पादन का केंद्र नहीं रहा। अब परिवार के सदस्य अपनी आजीविका हेतु भिन्न–भिन्न स्थानों पर कार्य करते हैं। पूर्व में धार्मिक कार्यों का संपादन और धार्मिक उत्सव अत्यंत हर्षोल्लास से मनाये जाते थे, आजकल यह दिखावे के अतिरिक्त कुछ नहीं है। परिवार के सदस्यों की धार्मिक भावनाओं में कमी आई है। पाश्चात्य संस्कृति के कारण व्यक्ति आध्यात्म छोड़ भोग विलास के पीछे भाग रहे हैं। परिवार का अपने सदस्यों पर नियंत्रण हटता जा रहा है। प्रथाओं, परंपराओं और रीति–रिवाजों का पालन नही करना, आधुनिकता समझा जाने लगा है। परिवार द्वारा ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को संस्कृति, मूल्यों, प्रथाओं और परंपराओं का हस्तांतरण होता था, किंतु नवपीढ़ी पथभ्रमित हो गई है। किंतु परिवार ही वह संस्था है जो युवापीढ़ी को जागरूक कर पुनः अपने सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण में ढाल सकती है।

निष्कर्ष :

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर हम कह सकते हैं कि वर्तमान परिदृश्य में पारिवारिक संरचना का स्वरूप अत्यंत परिवर्तित हुआ है। कुछ परिवर्तन सकारात्मक है तो कुछ परिवर्तन नकारात्म कभी । नकारात्मक परिवर्तनों से उत्पन्न समस्या का हल भी परिवार के सदस्यों को ही आपसी सामंजस्य, प्रेम, स्नेह और आपसी सौहार्द से निकालना होगा,क्योंकि तेजी से बदलते परिवेश में परिवार ही वह संस्था है जो समाज को विखंडन से बचा सकती है। परिवारिक नियंत्रण का व्यक्ति पर प्रभाव धार्मिक व कानूनी नियंत्रण से अधिक होता है। परिवार ही अपने सदस्यों में मूल्यों, संस्कार और नैतिकता का संचार कर सकता है, जिससे आधुनिकता, भूमंडलीकरण और डिजिटलीकरण के इस युगमें भी मानव उचित–अनुचित, सही–गलत में स्पष्ट भेदकर अपना व सम्पूर्ण समाज का कल्याण कर सकता है। एल्मर की परिभाषा परिवार के महत्व का सही चित्रांकन करती है– "आज का मानव कितने ही अनोखे कार्य कर रहा है, फिर भी परिवार के अतिरिक्त ऐसे किसी योग्य संगठन का आविष्कार अब तक नहीं कर पाया है जिस पर परिवार के कार्यों को निश्चित व निर्भय होकर सौंपा जा सके।"

सन्दर्भसंकेत :

1. http://www.scotbuzz.com
2. http://www.prabhasakshi.com
3. https://www.pravakta.com
4. https://hindi.speakingtree.in